

## एक ही राह बताई है

एक ही राह बताई है,  
मेरे श्याम ने मुझको।  
हर क्षण उसका नाम रटूँ,  
और रंगूँ तो ही तो पाऊँ उसको॥

गर तेरे रंग में ख्रो ही गये,  
तो राम नाम से क्या होगा।  
तुझ में ही लय गर हो गये,  
तो सारे ज्ञान से क्या होगा॥

ज्ञान थारी में धर कर राम,  
चरण चढ़ाऊँ काहे को।  
मिट जाना ही प्रयोजन मेरा,  
ज्ञान बढ़ाऊँ काहे को॥

नाम की पूँजी दे दे मुझे,  
कई विधि उसे मैं सजाऊँगी।  
जीवन थारी सज जायेगी,  
तो तुम तक ले कर आऊँगी॥

(अर्पणा भजनावली - पृष्ठ ४९२)

## अनुक्रमणिका

३. यज्ञमय जीवन ही ब्रह्मचर्य है!  
पूज्य छोटे माँ
७. श्रेय पथ और प्रेय पथ  
पिता जी के प्रश्नोत्तर
१२. आज मन मधूर को  
नाचने से मन रोकना...  
श्रीमती पम्मी महता
१७. वडा साहिबु ऊचा थाउ।  
ऊचे ऊपरि ऊचा नाउ।...  
अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब'
२४. भगवान कर्मफल न्यायपूर्ण ही देते हैं...  
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता -  
भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन'
२९. त्याग इसे ही कहते हैं,  
बिन त्यागे जो छूट गया...  
'मुण्डकोपनिषद्' में से
३२. ज्ञान है, तो उसका प्रमाण  
व्यवहार में होना है...  
पूज्य माँ के सत्संग में से संकलित
३५. अर्पणा समाचार पत्र

❖ ❖ ❖

तू परिक है राम धाम का, क़दम बढ़ाना ही होगा।

लक्ष्य तेरा है सामने, उसको पाना ही होगा॥

प्रारब्ध वेग से जो मिले, हँस हँस कर उसको तू सह ले।

दोष न दे उस राम को, चित्त से राम ही तू कह ले॥

❖ ❖ ❖

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्व किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : पूनम मलिक

सह सम्पादक : श्रीमती साधना पाल

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल

९३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल ९३२ ०३७ ०९, हरियाणा द्वारा विसम्बर २०९५ को प्रकाशित तथा  
सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-१, नई दिल्ली ९९० ०२० द्वारा मुद्रित

# यज्ञमय जीवन ही ब्रह्मचर्य है!

पूज्य छोटे माँ



परम पूज्य माँ के साथ पूज्य छोटे माँ

साधारण भाषा में 'ब्रह्मचर्य' का अर्थ वैवाहिक बन्धन से मुक्त रहना होता है। परम पूज्य माँ ने ब्रह्मचर्य को एक अलग परिभाषा देते हुए बताया कि 'ब्रह्ममय आचरण ही ब्रह्मचर्य है'

प्रस्तुत लेख में पूज्य छोटे माँ ने ब्रह्ममय आचरण के प्रत्येक पहलू की व्याख्या की है :

जब सब केवल ब्रह्म है,  
दूजा कहीं पे है नहीं।  
ब्रह्मचर्य बिन कोई भी,  
आचरण कहीं पे है नहीं॥

एक पात भी नहीं हिले,  
गर वह ब्रह्म ही न चाहे।  
कौन कर्म कहाँ ऐसा है,  
जो बिन वा कहे ही हो जाये?

हर क्रिया हर तन की ही,  
ब्रह्मचर्य ही होती है।  
हर भावना हर मन की,  
ब्रह्म की ही होती है॥

- परम पूज्य माँ

### **'ब्रह्ममय आचरण ही ब्रह्मचर्य है'**

ब्रह्मचर्य की राह भी ब्रह्मचर्य ही है। जग तो पूर्ण ब्रह्म ही है, परन्तु हमने अपने आचरण को ब्रह्ममय बनाना है। जब हमारा हर आचरण ही ब्रह्ममय हो जायेगा, वही ब्रह्मचर्य होगा। जब अहर्निश हर कर्म ब्रह्म का ही हो गया, फिर उसके हर भाव, विचार, हर ज्ञान में सोते-जागते, उठते-बैठते केवल ब्रह्म की ही पूजा होती है। तत्पश्चात् जितने-जितने हम इस भाव में रंग जायेंगे, हम ब्रह्मचारी होते जायेंगे।

वास्तव में साधक अपने मन को ही मनाता है और कहता है - 'हे मेरे मन! तेरा हर कर्म ब्रह्ममय ही होना है। तू तीनों स्तरों पर अपने संग से उठकर ही ब्रह्मचर्य तक पहुँच पायेगा।' जिसके पास अहंकार नहीं होता, वह ब्रह्मचर्य में ही वास करता है क्योंकि वह मानता है कि ब्रह्म के बिना कुछ भी नहीं है।

कर्त्तापन के अभाव को भी ब्रह्मचर्य कहते हैं। जब दिनचर्या में 'मैं यह कँड़, मैं कर सँझँ' के भाव का नितान्त अभाव हो जाता है तो ब्रह्मचर्य कहलाता है। ऐसा जीव सब कुछ करके भी कुछ नहीं करता। वहाँ पर मन मौन होता है। स्थूल कर्म तो सब उसी प्रकार से होते हैं। परन्तु जो राहों में बोल पड़े, उस मन का नितान्त अभाव होता है।

ब्रह्मचारी की यही विलक्षणता होती है कि उसका मन कर्मों में तल्लीन नहीं होता बल्कि इस भाव में निमग्न होता है कि सब राम है, सब ब्रह्म ही है; यही उसका सहज स्वभाव बन जाता है।

ब्रह्मचारी का जीवन तपमय होता है। वह पल छिन नाम में निमग्न रहता है। वह इस और दृष्टिपात ही नहीं करता कि उसके तन को क्या मिला? वह तन की बातें ही भूल जाता है। ब्रह्मचारी के हृदय में सत्य प्रतिष्ठित रहता है। वह तो स्वच्छ हृदय वाला महन्त होता है। उसके पास विषयी मन नहीं रहता। उसमें अहंकार का नितान्त अभाव हो जाता है।



पूज्य छोटे माँ के साथ अर्पणा से कुछ सदस्य एवं सत्संगी...

### 'ब्रह्मचर्य यज्ञ ही है'

यज्ञ को ही ब्रह्मचर्य कहा है। सर्वश्रेष्ठ परम पुरुषार्थ जो हम हवि रहित यज्ञ के लिए करते हैं, वह ब्रह्मचर्य ही है। वास्तव में यज्ञ को जानने वाला वही है जिसका वर्तन ब्रह्ममय हो। ब्रह्मचर्य का पालन भी वही कर सकता है जो ब्रह्मलोक में खो जाता है। यज्ञमय जीवन ही ब्रह्मचर्य है। उसके जीवन का हर कर्म ही ब्रह्ममय होता है। वह यह मानता है कि कोई भी कर्ण ऐसा नहीं जो ब्रह्म से अतिरिक्त है। इसलिए बिना ब्रह्म की प्रेरणा के कोई भी कर्म नहीं हो सकता।

साधक के यज्ञ की सार्थकता इसी में है कि वह हर कर्म को भगवान के चरणों में अर्पित करता है। वास्तव में ब्रह्मचारी ही यज्ञ का फल प्राप्त करते हैं क्योंकि उन्होंने ब्रह्म को ही यज्ञ मान कर हर कर्म किया। ऐसे ज्ञानी ही यज्ञ के फलस्वरूप ब्रह्मलोक को प्राप्त करते हैं। ब्रह्मचारी ही यह मान सकता है कि सब ब्रह्ममय है।

पूर्ण संसार में केवल ब्रह्ममय यज्ञ ही हो रहा है। समाचिटि कोण से सम्पूर्ण संसार उस ब्रह्म का ही यज्ञ है और यह उसी की अध्यक्षता में चल रहा है। ब्रह्मचारी यही मानता है कि इस जग में अधिभूत, अधिदेव और अधियज्ञ, सब कुछ ब्रह्म की ही प्रेरणा से हो रहा है। पूर्ण संसार में जो कुछ भी हो रहा है, ब्रह्मचारी उसे ब्रह्म पर छोड़ देता है। ऐसा ब्रह्मचारी ही महायज्ञ करता है और उसके पूर्ण कर्म कर्तव्य की एक अखण्ड लड़ी ही होते हैं। यही उसकी नाम की माला है।

सच्चे जिज्ञासु की श्रद्धा तो अखण्ड ब्रह्म में है... वह उसी के अनुसार ही रूप धर कर आते हैं। साधक ब्रह्मचर्य के द्वारा ही सत्य का पूजन करता है। ज्यों ज्यों इसमें तीव्रता आती है, उसका चिन्तन अखण्ड हो जाता है और वहाँ श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। राम मिलन की चाह ही हमें राम जी के चरणों में ले जाती है।

साधक का ब्रह्मचर्य तभी सफल होता है, जब उसका जीवन ब्रह्म का हो जाता है। वहाँ पर अपने कर्म का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

वह तो स्वयं ही अपना नाम, रूप और उपाधि को भूलकर ब्रह्म रूपा सागर में खो जाता है।

वास्तव में परम चरण में खो जाने की राह ही दिव्य यज्ञ है। जिस जिज्ञासु की परम मिलन की तीव्र चाहना है, उसके पास ही अनन्य भाव है। वही इसकी चाहना कर सकता है। वह अपने इष्ट को किस रूप में चाहता है, यह उसका अपना निजि भाव है। हर जीव ब्रह्म को अपने निजि भाव के अनुसार चाह रहा है। तुलसी दास जी ने भी कहा है - 'जा की रही भावना जैसी, प्रभु मूरत तिन देखी तैसी'...

जो जीव जिसे भी सत्य मानता है, उसी में प्राण भर देता है, वही उसके लिए इष्ट है। इसी प्रकार जिसे केवल ब्रह्म की जिज्ञासा है, वही ब्रह्मचारी है। परम के दृष्टिकोण से तो सभी ब्रह्मचारी हैं। वहाँ पर तो हर कर्म ब्रह्ममय ही हो रहा है।

वास्तव में हमारे जो भी इष्ट हैं, उन्हें हम ब्रह्म मान कर ही उनका पूजन करते हैं। उस लक्ष्य तक पहुँचने की राह ही ब्रह्मचर्य है। इसी तरह यज्ञ की बात है, साधक जिसको ब्रह्म मानता है, उसी में अपनी श्रद्धा को भर देता है। उसी को वह सत्य मानता है और उसी में ही उसका चित्त खो जाता है। सत्यता तो यही है कि सब ही ब्रह्म है परन्तु इसको फलीभूत करने की, फल लाने की शक्ति तो श्रद्धा के पास है। जहाँ पर हमारी अटूट श्रद्धा हो जाती है, वही फल हमें मिल जाता है।

अब हमने देखना यह है कि हमारा इष्ट कौन है? चाहना ही हमारा इष्ट है... हम चाहे राम जी को चाहें या कामना पूर्ति की चाहना रखें; हर प्रकार से केन्द्र विन्दु तो चाह ही है। यदि ब्रह्म ही हमारे इष्ट बन गये तो परिणाम ब्रह्मचर्य ही होगा।

इष्ट पूजन भी वास्तव में ब्रह्म पूजन है। इसमें हर कर्म, हर धर्म केवल ब्रह्म का आचरण है। हमारे भाव की जो निहित सत्यता है, वही ब्रह्मचर्य कहलाती है। जन्म-जन्म के कर्मफल का बीज भी यह सत्यता ही बनती है। जो अज्ञानता में रह जाता है, वह व्यर्थ में सोया हुआ ही रह जाता है। यदि ध्यान से देखा जाये तो ब्रह्मचारी तो दोनों ही हैं। चाहे जग की चाहना कर ले और चाहे राम की। निहित रहस्य तो मानने की बात है कि हम क्या और किसे सत्य मानते हैं...!!



# श्रेय पथ और प्रेय पथ



परम पूज्य माँ मन्दिर में

## पिता जी

कठोपनिषद् में श्रेय और प्रेय दो पथ कहे हैं, नचिकेत ने इन्हें तत्काल समझ लिया। भगवान ने गीता में भी कहा है कि अपनी बुद्धि के अनुसार न चलो, शास्त्र की बुद्धि के अनुसार चलो!

श्रेय और प्रेय पथ क्या हैं? इनकी अनुसरण विधि तथा परिणाम विस्तार पूर्वक समझाइये...

## सारांश

श्रेय पथ जीव को कल्याणकारी, उत्तरायण की ओर ले जाता हुआ शुक्ल पक्ष में, यानि सत् उजियारे में स्थित कराता है। प्रेय पथ दक्षिणायन की ओर ले जाता हुआ, संग और मोह का वर्धन करके अँधियारे कृष्ण पक्ष में अज्ञान वर्धन करता है।

## प्रश्न अर्पण

कठोपनिषद् में तूने, श्रेय और प्रेय दो पथ कहे।  
नचिकेत तो समझ गये, पर हम कुछ नहीं समझ सके॥१॥

शास्त्रावलम्बन राहीं तुम, सत् पथ की हमें बात कहो।  
सविस्तार श्रेय प्रेय विधि, वा परिणाम भी तुम कहो ॥२॥

### तत्त्व ज्ञान

श्रेय पथ कल्याण पथ कहो, उत्तरायण ओर है जो बढ़े।  
विवेक जिस पल उठी आये, शुक्ल पक्ष में स्थित करे ॥३॥

श्रेय है ज्ञान उत्तरायण में, विज्ञान वह बन जाये।  
शुक्ल पक्ष में जब आये, ज्ञानधन वह बन जाये ॥४॥

उचित विचार बुद्धि वर्धक, विवेक परिणाम है श्रेय पथ का।  
मन श्रेष्ठ भये बुद्धि विशिष्ट, परिणाम में पाये चेतनता ॥५॥

प्रेय पथ प्रथम तो प्रिय लगे, दक्षिणायन ओर बढ़े।  
आँधियारा जब हो जाये, कृष्ण पक्ष में जीव बसे ॥६॥

रुचि अरुचि वहाँ पे है, दूजे की वहाँ बात नहीं।  
अहंकार वर्धक वह हो, सत्य का है अभाव वहीं ॥७॥

मान्यता बैंधा सत् देखे न, मिथ्यात्व रमणी हो जाये।  
कर्तृत्व भाव वर्धन होये, सत् सार वर्जित हो जाये ॥८॥

श्रेय पथ पथिक संग देखे, देखी संग सों उठ जाये।  
शुक्ल पक्ष में जब पहुँचे, संग अभाव फिर हो जाये ॥९॥

कर्ता देखे कर्तृत्व तजे, कर्म अभाव वहाँ हो जाये।  
ब्रह्म देखे 'मैं' को तजे, भूतभाव से उठ जाये ॥१०॥

कल्याणकर आनंद दे, परम मिलन राह श्रेय कहें।  
सत्त्व का जो वरण करे, भ्रम वर्जक जो उसे श्रेय कहें ॥११॥

रुचिकर जग सुख समिधा के, आश्रित गर वह हो जाये।  
उपार्जित भोग समिधा हो, प्रेय चाकर वह हो जाये ॥१२॥

श्रेय भक्ति है जान लो, प्रेय आसक्ति तुम कह लो।  
श्रेय मुक्ति दे जान लो, प्रेय अनुरक्ति दे कह लो ॥१३॥

प्रेय में भोग है जान लो, श्रेय योग का पथ कह लो।  
जन्म मरण का चक्र प्रेय, जीवन मुक्ति श्रेय फल कह लो ॥१४॥

मंदमति प्रेय ओर बढ़े, श्रेष्ठ बुद्धि श्रेय ही दे।  
मोह रुचि आँधो है प्रेय, विवेक जागृत श्रेय करे ॥१५॥

सत् चित्त आनंद रूप, श्रेय पथिक हो जाते हैं।  
जड़वत् अहं जड़ रूप, प्रेय पथिक हो जाते हैं ॥१६॥

भूतभाव और संग का, जानो जो अभाव करे।  
वह ही श्रेय पथ है साधक, शास्त्र श्रेय पथ कह रहे ॥१७॥

### ज्ञान-विज्ञान सहित

जो श्याम कहें नानक कहें, या जो भी शास्त्र जो कहे।  
गर अनुसरण वा कीजिये, श्रेय पथ वह ही स्वतः भये ॥१८॥

पथ समझ तू साधक अब, पथ पे क्रदम जब धरते हैं।  
पदचिन्ह श्याम के देख तो ले, जीवन में कैसे विचरते हैं ॥१९॥

साधारण कर्म के पाछे, सत् चित्त शुद्धता चाहिये।  
मनोमल धुल जाये तेरी, ऐसी क्रिया बस चाहिये ॥२०॥

संग ही है जो प्रेय पथ पे, साधक को ले जाता है।  
संग कहाँ तोरा देख तो ले, द्वौ पथ का इससे नाता है ॥२१॥

हर शास्त्र ने जो कहा, आंतर की ही बात कही।  
कैसा मन बुद्धि होये, कैसी हो साधक दृष्टि ॥२२॥

कर्तृत्व भाव अभाव पथ, सत् ज्ञान है जान ले।  
कर्ता केवल राम है, श्रद्धा से इसे मान ले ॥२३॥

तनो रचियता और है, क्यों तन पे तू मान करे।  
तन तो वह ही रहे तेरा, गुमान वहाँ से छोड़ दे ॥२४॥

गुण अभिमान तू छोड़ दे, यह गुण तुझे हैं स्वतः मिले।  
दूजे को क्यों बुरा कहे, वह भी गुण से बँधा रहे ॥२५॥

तेज क्षमा दया धृति, आंतर के गुण जान ले।  
अदम्भ अहिंसा आर्जवता, अभय भी गुण हैं आंतर के ॥२६॥

यज्ञ करो तुम आंतर में, आंतर विवेक की अग्न जले।  
कर्तृत्व भाव कहाँ रह सके, सत् ‘होता’ गर वहाँ भये ॥२७॥

मनोजाल जो आंतर में, मान्यता ने जो रूप धरा।  
जो जग को तू समझ रहा, वह केवल है तेरी मान्यता ॥२८॥

जो तू करे वह देखे न, जो माने उसे तू सोचे न।  
विचार करी गर तोले न, दूजे का कोण भी देखे न ॥२९॥

निज को श्रेष्ठ तू माने है, प्रेय पथ की यह बात है।  
अहंकार जिसे कहते हैं, प्रेय पथिक की घात है ॥३०॥

सुख दे दूजे को मनुआ, आनंद तब ही पायेगा।  
जो चाहे दूजे को दे, नित्य तृप्त हो जायेगा ॥३१॥

स्थित बुद्धि तू पा जाये, इसके अब तुम यत्न करो।  
बाह्य यत्न की बात नहीं, यह पथ भी आंतर ही हो ॥३२॥

प्रेय पथ के दर्शन होयें, श्रेय पथ सूक्ष्म ही बात है।  
प्रेय पथ स्थूल का रूप धरे, श्रेय आंतर सत् बनात है ॥३३॥

भाव परिवर्तन हो जाये, श्रेय पथिक बस यह चाहे।  
स्थूल मूल्यवान की जा, गुण अमूल्य ही हो जाये ॥३४॥

प्रेम अमूल्य इतना भये, प्रेम स्वरूप चाहे हो जाये।  
स्थूल की बात तब कौन करे, जब प्रेम से प्रेम ही हो जाये ॥३५॥

क्षमा दया उसे श्रेष्ठ लगे, सत् करुणा को वह माने।  
जीवन में करुणा करे, इसको वह श्रेय पथ जाने ॥३६॥

जो भी कर्म जैसा भी हो, वा करुणा बहती जायेगी।  
विकराल रूप कभी सौम्य रूप, करुणा ही भरी के आयेगी ॥३७॥

भाव में सत्य ही प्रिय लगे, प्राप्तव्य बस सत्य रहे।  
जीवन ध्येय ही यह भये, सत् में ही वह टिका रहे ॥३८॥

जो सामने हो उसे सत् देखो, जो जैसा हो उसे देख लो।  
जो गुण जिसमें जैसा हो, उसकी सत्यता देख लो ॥३९॥

जो है सत् है वह जाने, परिवर्तन वह चाहे न।  
कोई पूछे वा तद्रूप हो, उद्धिग्नता वहाँ पे लाये न ॥४०॥

गर सत् की कोई पूछे बात, गुण तुलना वह स्पष्ट करे।  
मान मिले अपमान मिले, वह तो झूठ न कह सके ॥४१॥

परिणाम में जो भी उसे मिले, निरपेक्ष श्रेय पथिक रहता है।  
संग सत् से उसका है, वह हर पल सत्त्व में रहता है॥४२॥

योग की चाहना हिय लिये, वह मिलन राम से चाहता है।  
अपना नाम मिटा करके, वहाँ राम नाम ही चाहता है॥४३॥

राम नाम से भी समझो, वह राम सा बनना चाहता है।  
मन बुद्धि अपनी त्यजी, वहाँ राम की धरना चाहता है॥४४॥

जीते जी कहें तन त्यजे, इसका राज्ञ भी समझ लो।  
ज्यों राम जिये वैसे ही जिये, इसको तनो त्याग कहो॥४५॥

छोटा सा था मन उसका, विशाल वह करना चाहता है।  
न्यून सी बुद्धि थी उसकी, वह राम से भरना चाहता है॥४६॥

श्रेय पथ पथिक वह बन जाये, लक्ष्य वह यही बनाता है।  
भावना के और बुद्धि के, आसरे बढ़ता जाता है॥४७॥

उत्तरायण की ओर बढ़े, उत्तरायण पथ उसका भये।  
धरती पे पग जो भी पड़े, उनकी ओर नहीं देख सके॥४८॥

सूक्ष्म पथ अव्यक्त है, सूक्ष्म क्रदम भी वह धरे।  
जितना सूक्ष्म संग बढ़े, उत्तरायण की ओर बढ़े॥४९॥

क्रदम विना हैं क्रदम वहाँ, कर्म विना हैं कर्म वहाँ।  
श्रेयपथ उत्तरायण का पथिक, नाम विना नहीं यत्न वहाँ॥५०॥

भूतभाव जीवत्व भाव, व्यक्तित्व भाव वहाँ कहाँ रहे।  
जितना जितना राम को दे, उतना समष्टि हो जाये॥५१॥

व्यक्तिगत जो भी गुण थे, समष्टिगत वह होने लगे।  
मन बुद्धि और तन उसके, राम के ही होने लगे॥५२॥

अंधियारा उतना ही मिटे, जितना सत्त्व वहाँ आ जाये।  
पूर्ण राम का हो जाये, प्रकाश ही केवल रह जाये॥५३॥

कर्तृत्व भाव अभाव सुनो, देख स्वतः ही हो जाये।  
जब तन भये यह राम का, भोक्ता भी वही हो जाये॥५४॥

श्रेय पथ की हम क्या कहें, श्रेय ही श्रेय वहाँ मिले।  
न्यून जीव में देख ज़रा, भगवान रूप ही आप धरे॥५५॥

# आज मन मयूर को नाचने से मत रोकना...

श्रीमती पम्मी महता



परम पूज्य माँ के साथ श्रीमती कमला भण्डारी एवं श्रीमती पम्मी महता

हे मन, आ, दत्तचित्त होकर परम पूज्य श्री हरि माँ के श्री चरणन् में बैठ जा!  
आप जन्म-मरण की व्याख्या करने लगे हैं... उसका श्रवण, मनन और निदिध्यासन का  
दिव्य प्रसाद माँगते हुये, अनन्य श्रद्धा व प्रेम से तथा भक्ति भाव से उन्हीं से, उनकी वाणी  
से निःसृत हो रही यह व्याख्या सुनने!

जानती नहीं, यह जन्म-मृत्यु है क्या, साधक कोण से! आप श्री हरि माँ ने पहले ही कह दिया, “परम याचक ही इसे समझ पायेगा।” मैं कहाँ जानती हूँ कि मैं परम याचक हूँ भी या नहीं... आपने करुण कृपा करी मुझे बुला लिया। मेरे लिए यही बहुत है। हे श्री हरि माँ, पात्रता का तो इसे पता नहीं, मगर आपकी मेहर, आपकी नज़र-इनायत अवश्य मिल गई।

आप माँ ने कहा, “जब संग, चाह का नितांत अभाव हो जाता है व सत् में जा चित स्थित हो जाता है, तब जग से मन उदासीन होने लगता है। यह एक पल की कहानी नहीं है... जीवन गुज़र जाता है, मन का अमन होने में! क्योंकि यह मन ही है जो जीव को उसके स्वरूप से अलग कर देता है। यही तो अपने आप से वियोग है। इसे चाहो तो भले ही मृत्यु कह लो क्योंकि इस विध ही हम अपने स्वरूप से विछुड़ने लगते हैं। यही साधक की मृत्यु है।”

संसार से जब जीव जाता है तो उसके लिए लोग कहते हैं कि फलां मृत्यु को प्राप्त हो गया। मगर साधक जब अपने स्वरूप से विछुड़ने लगता है, उसका यह विछुड़ना ही मरने के समान है उसके लिए... क्योंकि वह तो अपने आप से विछुड़ कर अपनी पहचान ही खो बैठा है। धन्य हैं आप श्री हरि माँ, जो मेरी भूल से मेरा परिचय करा रहे हैं कि ‘देख! तू जी कर भी मरे हुये के समान है।’

कभी-कभी तो दिल में आता है कि निराश न होकर यह देखें कि जब श्री हरि माँ साथ हैं तो आप अपने में स्वयं ही स्थिर कर लेंगे। आप जानते हैं कि हम पथभ्रष्ट हो गये हैं... और कृपा करी हमें यह भी आभास करवा दिया है आपने कि हम कैसे गुमराह हो गये हैं...

हे श्री हरि नाथ आप ही ने ललक जगा दी है कि हम सभी आप ही से सनाथ हो जायें व आप ही के रंग में रंग जायें! यह भव्य प्रसाद है, यह जाने हूँ। अतीव दुर्लभ भी है, यह भी माने हूँ; इसलिए हे श्री हरि माँ, आईये, इस ‘मैं’ की अंत्येष्टि इस जीवन में ही हो जाये ऐसो ही असीम अनुग्रह हम पर कर दीजिये। जिस विध भी लगे इस ‘मैं’ को पूर्ण विराम व सभी प्रभुमय ही हो जाये, वही विधि हमरो हृदय आँचल में भर दीजिये।

सच्चे व सुच्चे मनों से इसे हृदयों में धारण कर पायें व आपकी अनमोल देन को अंगीकार कर पायें। हे ईश, हम पर अपना असीम अनुग्रह कर दीजिये जो आपका ज्ञान प्रवाह, प्रेम प्रवाह में उत्तर करी हम सभी के आंतर से बहने लगे। सफल होगी आपके प्रति हमारी आराधना माँ, हमारी साधना को आपका आशीर्वाद मिल जायेगा!

जन्म-जन्मांतर से लगा यह ‘मैं’ का कलंक आप ही की कृपा से मिट पायेगा। आंतर कलियुग बदलने से ही बाहर का युग बदल जायेगा! आप ही से जान पाये कि इस मृत्यु-धर्मा तन से लग्न लगा लेना ही वास्तव में मृत्यु है।

सर्वप्रथम आप हमें तनोकोण से बता रहे हैं यह तन त्रिगुणात्मिका शक्ति से पैदा होता है। यह गुणों का ही खिलवाड़ है। शरीर के स्थूल रूप को ही हम जन्म कहते हैं।

जिस प्रकार फलों का बीज धरती पर पड़ता है, उसी तरह कर्म बँधा प्रवाह व संस्कार हृदय गर्भ में रहते हैं। जब परम संकल्प रूपा उत्तु आती है वह जीव वैसा ही रूप धर कर जन्म ले लेता है। जैसे संस्कार होंगे वैसा ही तन उभर आयेगा। बाह्य परिस्थिति तो विधान रचित है और उसका पहले ही निर्माण हो जाता है। जब संस्कार फूटते हैं तो इसे हम कहते हैं ‘जन्म हो गया!’ संस्कारों के अनुरूप व विधान के अनुरूप ही उसका जीवन चलने लगता है।

चेतन स्वरूप ही ‘मैं’ भाव को चेतन कर देता है। अहम् भाव ही, जो विधान के अधीन स्वतः प्रवाहित हो रहा था, उसे अपना कर जड़ तन को चेतनता प्रदान कर देता है। ब्रह्म सों ‘मैं’ चेतनता पा कर इस जड़ मन को चेतन कर लेती है। इस मन का जन्म ही हम जन्म मान लेते हैं। जब जन्म हुआ, कोई नाम न था, फिर वह भी आरोपित हो गया। जग ने जो नाम दे दिया वही आरोपित हो गया और सर्वप्रिय भी हो गया। यही मूल कारण है जो जीव इस ‘मैं’ को व इस जन्म को अपना बैठा। अहम् को भी अपना कर उसे हमें ने चेतनता प्रदान कर दी।

हम इस तन की यौवन अवस्था, वृद्धा अवस्था से संग लगाये बैठे हैं। फिर जरा अवस्था आ जायेगी... जिस पर अपना बल व मान माने बैठे हैं वह ठुकरा देगें। बस हे मन, इसी सत्यता को जान ले। द्रष्टा बन कर दूर से इसे भी जलधारा की तरह प्रवाहित होता देख - जैसे जल स्वतः ही बहता रहता है। यह तन भी स्थिर नहीं रहता जो हर पल बदलती हुई अवस्थाओं में से गुजर रहा है। इक नाम ही है जो नहीं बदलता। यह ‘मैं’ तो ‘मैं’ ही रहेगी। बाकी सभी परिवर्तनशील हैं, पल पल बदलता जा रहा है। जग ने नाम दे दिया, तन ने सभी कर्म किये - बस यही सोच कर देख ले पगले मन तू ने इसका नाम ‘मैं’ क्यों धर दिया...?

सत्युग में तो कोई भी इस तनोसंग में फँसता ही नहीं होगा! चलो, देर आये दरुस्त आये... अब भी हम सभी प्रभु जी की कृपा से चेत जायें, स्वयं को आवृत करके न जीयें तो जीवन के अनिष्ट, अनर्थ, छल-कपट, राग-द्वेष, मोह-माया, संग-मम-मोह, अहम् इत्यादि कभी छू भी नहीं पायेंगे। हमारी दोष-दृष्टि ही माया का आवरण है, हम यूँ ही स्वयं को मैला कर लेते हैं। कालिमा युक्त हो जाते हैं। यही दोष-दृष्टि हमें कहाँ से कहाँ लिवा ले जाती है, हम कैसे-कैसे कालिमा युक्त हो जाते हैं।

हे भगवान, हे श्री हरि माँ, आपकी असीम करुण कृपा का ही यह प्रसाद है... हमारी अज्ञानता का यूँ विश्लेषण करी आप श्री माँ ने ही हमें इससे अवगत कराया। सतपथ, जहाँ रोशनाई ही रोशनाई है, उधर ही लिवा ले जाने का असीम अनुग्रह हम पर करते ही चले जा रहे हैं; जो हम सभी इस माया से सदा के लिये निवृत होकर आप ही आप में आ पायें...

बार-बार याद आता है आप श्री हरि माँ की वाणी का परम सत्य... “तन तो मृत्यु-धर्मा है। इक रोज़ मर ही जायेगा। मगर यह मेरी नहीं, तन की मृत्यु है - इसे रेखा कह लो भले ही!”

दक्षिणायन को आपने कभी छोड़ने के लिए नहीं कहा! आपने तो हमेशा उत्तरायण की ओर चलने को कहा है। ‘दक्षिण स्वतः छूट जायेगा!’ - कितना प्यारा व सुन्दर आश्वासन है जीव जगत को आपका!



चित्र में परम पूज्य माँ, पूज्य छोटे माँ, डॉ. रमेश महता, श्रीमती पम्मी महता एवं परिवार के जन

“जो नव कर्म संचित हो चुके हैं वह पुनः नव रूप धारण कर लेंगे। यूँ कह लो एक घर त्यज कर दूसरे घर में आ जायेंगे। नये परिवेश में, नव तन में...” आप श्री हरि माँ प्रभु जी साधक को पुनः दूसरी विधि से समझाने की कोशिश कर हैं! बड़े ही कुपालु व दयालु हैं हमरे प्रभु माँ! “ले, गर मन में कोई दुविधा व संशय रह गया है या तुझे समझ नहीं आया... तो लो, मैं तुझे दूसरे ढंग से समझाता हूँ!”

जीव-जगत के उत्थान के लिये कहूँ या साधक के लिये कहूँ, आप साधक को जीवन ज्ञान सुझा रहे हैं। अपने प्रिय लाडलों को अंधकार व अज्ञानता से निकाल कर परम सत्य में लाने का प्रयास कर रहे हैं... जो आगे ही आगे चलने की राह दे रहे हैं।

ममतामयी माँ, हमारी मलिनता को धो कर, हमें अपनी ज्योत्सना में लाने का सतत

प्रयास कर रहे हैं। कह रहे हैं माँ, ‘आ, मेरे लाड़ले व मेरी लाड़ली, आप मेरा ही अंश हो इसलिये आपको मलिन नहीं रहने दे सकती...’

कैसा अनुपम प्यार है, जो माँ हमारे अपने स्वरूप से ही हमें मिला रही हैं! धन्य हैं आप हे श्री हरि माँ, आप धन्य हैं! आपका जितना धन्यवाद करें कम ही है। कैसे अपना आभार व्यक्त करें...

अब आप श्री हरि माँ प्रभु जी, हमें स्वप्न की उपमा देकर सुझा रहे हैं, “देखो! जैसे ही स्वप्न से जाग जाओगे तो क्या उसे जन्म कहागे?” इसी को समझाते हुए आगे कहा, ‘अपने आप को जान तो सच ही मृत्यु से तर जायेगा! फिर तू जन्म-मरण की बातें कर ही नहीं पायेगा। यह सम्पूर्ण जग कर्मफल रूप विधि है। यह अनित्य है, मिट जायेगी! इसे ही तू मृत्यु-धर्मा जान ले। जब बिछुड़न होता है, उसे मृत्यु कह देते हैं... जो पल लौट कर ही नहीं आने वाला उसे काल खा जाता है। जब तन से संग त्यज दोगे तो वह भी मृत्यु ही होगी। तनो-मृत्यु तो ग्रह और नक्षत्र के हाथ है।’

धन्य हैं आप, जो हमें चहुँ और से समेट कर अपने में ले आये। कैसे-कैसे आपका कृपा प्रसाद मिल रहा है। ऐसे में यही प्रार्थना करते हैं, हे ‘मैं’ के आसुरी भावो! अब हमारी राहों में काँटे न विछाना! इतना याद रखना कि यह काँटे प्रभु जी ने स्वयं उठाये हैं हमारे लिए! अपने चरण कमलों से इस रहगुजर को बनाया है, जो हम इस परम पथ पर झूमते व नाचते हुये चलें!

आज मन मयूर को नाचने से मत रोकना, क्योंकि यह बुलावा प्यार का हमारे साई रव से आया है। आप माँ का आकर्षण ही इतना अनूठा, दिव्य व सद्गुणों से भरपूर है, जहाँ अपनी याद ही नहीं है कहीं भी! केवल जो सामने हैं वही आपका अपना आप है। इसलिये अपना आप जानकर ही उसका दर्द मिटाने के लिए कैसे तद्रूप हो जाते हैं उसके साथ। आपको तो कोई पराया कहीं दीखता ही नहीं।

जब श्री हरि परम पूज्य माँ ने हमारे जीवन की मुहार ही अपनी ओर मोड़ ली तो जाने हूँ यह बुलावा आप साई रव से ही आया है। हमें हमारी ही कलिमा से निजात दिलाकर हमारे स्वरूप की ओर लिवा ले जाने का हमारे साहिब का संदेसा है प्यार भरा! उनकी जानिब से हवा भी आये तो आनन्दित कर देती है! हे मन, तू साक्षी भी रहे और सदा साथ भी रहे इसलिए आओ न, हम सब मिलकर अतीव कृतज्ञ भाव से उनके श्री चरणन् में प्रणाम देते हुये उनकी चरणराज सीस चढ़ा लें।

आज से अब से रहें आप ही मैं माँ...

यही आशीर्वाद भरा हाथ हमारे सीस धरना

नर जीवन त्यजी करी नारायण की सेवा में ही है हमें बढ़ना!

कृपा करी लिवा ले जाना आप में यूँ ही धन्य धन्य हमें करना!!

हरि ओऽम्

वडा साहिबु ऊचा थाउ ।  
ऊचे ऊपरि ऊचा नाउ ।  
एवडु ऊचा होवै कोइ ।  
तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ।...



गतांक से आगे-

पौँडी २४

अंतु न सिफती कहणि न अंतु ।  
अंतु न करणे देणि न अंतु ।  
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ।  
अंतु न जापै किआ मनि मंतु ।

अंतु न जापै कीता आकारु ।  
 अंतु न जापै पारावारु ।  
 अंत कारणि केते बिललाहि ।  
 ताके अंत न पाए जाहि ।  
 एहु अंतु न जाणे कोइ ।  
 बहुता कहीऐ बहुता होइ ।  
 बडा साहिबु ऊचा थाउ ।  
 ऊचे ऊपरि ऊचा नाउ ।  
 एवडु ऊचा होवै कोइ ।  
 तिसु ऊचे कउ जाणे सोइ ।  
 जेवडु आपि जाणे आपि आपि ।  
 नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥

**शब्दार्थः** : उस परमात्मा की स्तुति का कोई अन्त नहीं, उसकी महिमा कहने का कोई अन्त नहीं। उसकी रचना का कोई अन्त नहीं, उसकी देन का कोई अन्त नहीं। उसके दर्शन का कोई अन्त नहीं, उसके श्रवण का कोई अन्त नहीं। मन में कौन सा विचार है, उसका भी अन्त नहीं। उसके जपन का भी अन्त नहीं पाया जाता। उस परमात्मा के किये पसारे का अन्त नहीं जाना जाता। उसके आर पार का अन्त नहीं जाना जाता। उसकी थाह पाने के लिये अनेकों तड़प रहे हैं, पर उसका अन्त पाया नहीं जाता। उसका यही अन्त है कि कोई उसे जान नहीं सकता। उसके बारे में अधिक कहने से वह और भी अधिक विशाल होता है। वह सबसे बड़ा मालिक है, उसका स्थान ऊँचा है। उस ऊँचे के ऊपर उसका नाम ऊँचा है (अर्थात् उससे ऊँचा उसका नाम है)। यदि इतना अधिक ऊँचा कोई और हो, तब ही वह उस ऊँचे (सर्वथेष्ठ स्वामी) को जान सकता है। जितना बड़ा वह आप है, वह स्वयं ही (अपने को) जानता है। हे नानक! उसकी कृपा दृष्टि से ही सब मेहर होती है।

**पूज्य माँ :**

वा गुण का कोई अन्त नहीं, वा कथनी अन्त कहाँ ।  
 वा करनी का अन्त नहीं, वा देन का अन्त कहाँ ॥१९॥

वा दर्शन का अन्त नहीं, श्रवण शब्द का अन्त कहाँ ।  
 वा कर्म हुक्म की कैसे कहूँ, को' जाने उसको यहाँ ॥२॥

नाम रूप का अन्त नहीं, संसार का पाये अन्त कहाँ ।  
 वा आदि और अन्त कहाँ, उसका जाने अन्त कहाँ ॥३॥

अन्त हेरन गये वे अन्त, तड़पे पर नहीं पाये अन्त ।  
 जितना जानें उतना बढ़ जाये, लीला देख वह तो वे अन्त ॥४॥

बड़े साहिवा वा सों बड़े धाम, उससों भी ऊपर वा का नाम।  
इतना बड़ा गर कोई होये, वह पहचाने उसका नाम ॥५॥

वह अपने को खुद जाने, हम नहीं सकें उसे पहचान।  
वा की नजर गर रहमत होये, तब ही मिले हमें उसका नाम ॥६॥

दिले आगार खुदापरवर, परवरदिगार वेअन्त है तू।  
व्यथित हृदय लिये चरण पड़ँ, अन्त की बात न कह सकूँ ॥७॥

न जाने कोई न जाने ज्ञान है क्या, न माँगे न माँग माँग है कोई क्या।  
तू नाम मुझको देता जा, बस इतनी करुणा तू कर जा ॥८॥

तुझे जानें न जानें अब जानें क्या, तुझे मानें न मानें अब मानें क्या।  
पहचानें न पहचानें अब पहचानें क्या, अब जानें अनन्त तुझे हम क्या ॥९॥

हम माँगें तेरा नाम मिले, चरण धूल भगवान मिले।  
नाम से दामन मेरा भर दे, तुझको कौन अब जान सके ॥१०॥

न जानूँ तेरा नाम, न जानूँ तेरा धाम, अनन्त अगोचर तू, न जानूँ तेरा नाम।  
फिर भी कहूँ तेरा नाम मिले, अब मिल जाये मुझे तेरा नाम ॥११॥

आदि न जानूँ अन्त न जानूँ, कितना है वेअन्त न जानूँ।  
इतना जानूँ बड़ा है तेरा नाम, मिल जाये अब तेरा नाम ॥१२॥

न जानूँ न जानूँ, न जानूँ तेरा नाम,  
मन माने न माने, माँगे तेरा नाम।  
न जानूँ ओ न जानूँ...

चरण पड़ी के सीस झुका के, बस एक ही माँगू तेरा नाम।  
अनन्त है तू वेअन्त है तू, को' जाने कस जाने तेरा धाम ॥१३॥

तेरे नाम की महिमा सुन करके, नानक चरणन् में हैं पड़े।  
तब ही नाम भी मिल सके, गर मालिक तू कुछ कृपा करे ॥१४॥

इतना माँगूँ बस, माँगूँ माँगूँ तेरा नाम।  
नानक नानक नानका, ही करें सुवह शाम ॥१५॥

और क्या माँगें क्या करें, क्या लें तेरा नाम।  
हम तो भिखारी, आये तेरे धाम।  
दे दे दाता मेरे अपना नाम, मिल जाये मुझे अब विश्राम॥१६॥

ओ नानका मेरे बादशाह, इतना माँगूँ आई के तेरे धाम।  
मिल जाये मुझे तेरा नाम”॥१७॥

चिन्तन में तू न आये, अतीन्द्रिय तू तुझे कस जानें।  
अचिन्त्य तू मन न जाने, अविज्ञात कैसे पहचानें॥१८॥

अप्रकट प्रकट तू आप है, अव्यक्त तत्त्व तेरा को’ जाने।  
असीम तू ससीम भये, सीमा रहित को को’ जाने॥१९॥

अनन्त है तू अनादि तू, सब तू हीं तू हम क्या जानें।  
मिल जाये नाम तेरा नानका, अब नाम दे तो मन माने॥२०॥

अधीर यह मन, भया पीर यह मन, तड़पे मन रहमत माँगे।  
घबराया मन, विचलित यह मन, चंचल मन यह तुझे माँगे॥२१॥

तेरा नाम मिले दीदार मिले, करुणा की बुन्दिया मिल जाये।  
संसार मेरा पूर्ण ले ले, अब तेरा नाम मुझे मिल जाये॥२२॥

ओ नानका! ओ नानका’

पौङ्की २५

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ।  
वडा दाता तिलु न तमाइ।  
केते मंगाहि जोध अपार।  
केतिआ गणत नहीं वीचार।  
केते खपि तुटाहि वेकार।  
केते लै लै मुकरु पाहि।  
केते मूरख खाही खाहि।  
केतिआ दूख भूख सद मार।  
एहि भि दाति तेरी दातार।  
बांदि खलासी भाणौ होइ।

होरु आखि न सके कोइँ ।  
 जे को खाइकु आखणि पाइ ।  
 ओहु जाणे जेतीआ मुहि खाइ ।  
 आपे जाणे आपे देइ ।  
 आखहि सि भि कई कई ।  
 जिस नो बखसे सिफति सालाह ।  
 नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥

**शब्दार्थ :** उसकी कृपा इतनी अधिक है कि उसके बारे में लिखा नहीं जा सकता। वह सबसे बड़ा दाता है, उसको तनिक भी लोभ नहीं। अनेकों शूरवीर उससे ही माँगते हैं। उन अनेकों की गणना का विचार नहीं हो सकता (अर्थात् उनकी गिनती नहीं हो सकती)। अनेकों विकारों में ही मर जाते हैं (अपना जीवन गँवा देते हैं)। अनेकों उससे ले ले कर मुकर जाते हैं (अर्थात् उसको धन्यवाद नहीं करते)। अनेक मूर्ख खाते ही खाते जाते हैं। अनेकों को सदैव दुःख तथा भूख की मार रहती है। हे दाता! यह भी आपकी ही एक देन है। आपकी आज्ञा से ही बंदी बनते हैं, आपकी आज्ञा से ही छुटकारा होता है और कोई कुछ नहीं कह सकता। यदि कोई मूर्ख आपकी महिमा कहने की कोशिश करे, तो वह ही जानता है, जितनी वह मुख पर खाता है (अर्थात् सफल नहीं होता)। ‘परमेश्वर आप ही जानता है और आप ही देता है,’ जो यह कहते हैं, वह भी विरले ही हैं; जिसको वह दाता अपनी स्तुति करने का सौभाग्य प्रदान करता है, हे नानक! वही बादशाहों का बादशाह है।

**पूज्य माँ :**

कौन बयान करे वा देन, लेखनी लिख ही नहीं सके ।  
 नित्य उदासीन चाहना के परे, सब की चाह पूर्ण वह करे ॥१९॥

अनन्त योद्धा शूरवीर, सब जग माँगन जाये ।  
 अनन्त जीव नित माँगें उससे, गणना की न जाये ॥२॥

अनन्त विचार ग्रसित मर जायें, कई लई लई देन मुकरायें ।  
 भोगी भोग अनन्त मरें, दुःख भोग भूख से मर जायें ॥३॥

यह जो हो सब तेरा कहा, तव हुक्म पूर्ण हुए जाये ।  
 आज्ञा तेरी सीस धरें, मुक्ति निश्चित मिल जाये ॥४॥

और कोई नहीं कह सके, नानक जाने क्या हो जाये ।  
 मूढ़ मुझ सा गर कहे जाने, तो पतन निश्चित हो जाये ॥५॥

ओ मेहरबान तेरी रहमत की, महिमा गाई न जाये ।  
 रहमदिल इनायत तेरी, इतनी मुझे मिल जाये ॥६॥

तू सब दे ओ दाता मेरे, मन कृतघ्न हो न जाये।  
जो है सब कुछ तेरा है, मन मेरा भूल न पाये॥७॥

तूने इतना दिया ओ मालिका, बयान भी हो नहीं पाये।  
भाव में तू न आ सके, कोई कैसे तेरे गुण गाये॥८॥

पर सब सुनी इतना जानी, होये जो तू ही कहे।  
पूर्ण जग जग जीव सब, तेरे हुक्म में ही चले॥९॥

तेरी रजा के बिन नानक, कुछ नहीं हो सके।  
जिन हुक्म तिहारा मानया, वो ही मुक्त भये॥१०॥

तू कहे नानक मेरे मालिका, वह तो सब कुछ दे।  
अशरण की शरणा आप है तू, शरणा भी मुझे दे॥११॥

यह इतना ज्ञान में क्या करूँ, समझी तू सब कुछ दे।  
जो मिले मिले सो मिला करे, मन हुक्म समुख झुके॥१२॥

ओ नानक मेरे बादशाह, तेरे दर पे हम आये।  
ओ निरंजन निर्विकार तू, बिनती स्वीकार कर ले॥१३॥

नाम की बुच्चिया दे दे मुझे, वा से झोली भर दे।  
तू गरीबनवाज़ रहमदिल, इतनी रहमत कर दे॥१४॥

तेरी रहमत की चर्चा सुनी, सुन कर दर आये।  
करुणापूर्ण नाम तेरा, सुन कर हम आये॥१५॥

चरण पड़ी पड़ करी, तुमसे माँग रहे।  
दीदार तेरा मिल जाये, नाम नज़र कर दे॥१६॥

ओ नानका मेरे मालिका, अनन्त असीम है तू।  
तेरे घर में कोई कमी नहीं, मेरा मालिक भी है तू॥१७॥

फटा दामन टूटा है दिल, ए दरियादिल रहम कर दे।  
अपना नाम इस दिल में मालिक, एक बार भर दे॥१८॥

ओ नानका तू उदासीन, तू अपने से है परे।  
तेरी चाहना कोई नहीं, मेरी चाह पूर्ण कर दे॥१९॥

अपने नाम से नानका, मेरा दिल भर दे।  
इतना माँगूँ नानका, इतनी कृपा कर दे॥२०॥

तुमने कहा सबने कहा, आप ही सब दे।  
और कोई न दे सके, कोई क्या तेरी कहे॥२१॥

तेरी कृपा हो तो गुण पायें, हम चरण में तेरी पड़ें।  
विगड़ी बना मेरी नानका, यहाँ नाम अखण्ड कर दे॥२२॥

सिफत न माँगूँ गुण न माँगूँ, अपना नाम बुलन्द कर दे।  
जिसको तू स्वयं ही दे, तेरी सिफत उसको मिले॥२३॥

ये ज्ञान की बातें जो कहो, मुझको समझ कुछ नहीं पड़े।  
समझ समझ के यह समझे, समझ चरण में पड़ी रहे॥२४॥

इतना समझी नानका, गर ज्ञान तेरा यह न माँगे।  
केवल चरण रज समझे, बिन समझे सब समझ ले॥२५॥

तूने कहा ओ नानका, तेरे दिये ही सब होये।  
तेरे कहे ही सब होये, परम दाता तू ही होये॥२६॥

ओ दाता मेरे मालिका, तेरी बात सुनी के आई हूँ।  
तेरे मुखारविन्द से ही, मैं आप सुनी के आई हूँ॥२७॥

कोई दूर की बात यह नहीं नहीं, मैं अब ही सुन के आई हूँ।  
जिसे तू बछो उसे सब मिले, मैं तुझसे सुन के आई हूँ॥२८॥

ऐ मेहरबान ओ मालिका, ऐ रहमदिल तू तरस खा।  
करुणा निधान तू करुणा पुंज, अब तो शरणी मुझे लगा॥२९॥

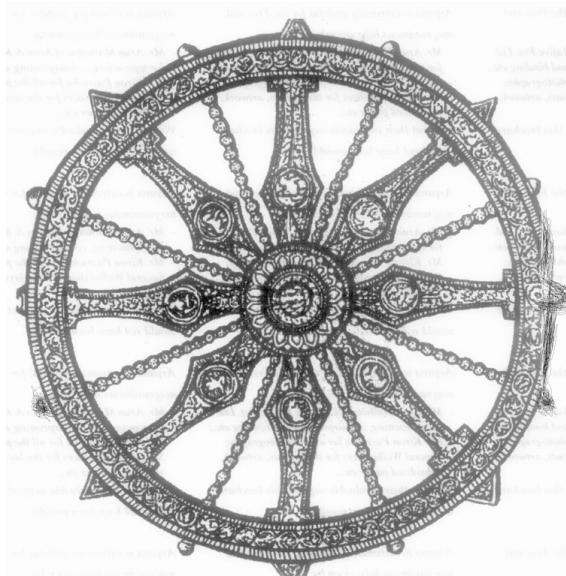
ओ नानका तूने आप कहा, तुझको कोई नहीं जान सके।  
तू सबको दे मेरे मालिका, बस नाम से झोली मेरी भर दे॥३०॥

पर नाम तेरा इतना जानूँ, चरण तेरे मैं सीस रहे।  
चरण रज तेरी मिल जाये, तो उससे मेरी माँग भरे॥३१॥

ओ मेरे मालिका ओ मेरे दाता तू, मेरे बादशाह मेरे नानका।  
दरियादिल इक नाम की, बुन्दिया दे दे साहिबा॥३२॥

क्रमशः

# भगवान कर्मफल न्यायपूर्ण ही देते हैं...



चातुर्वर्ण मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।  
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥

(श्रीमद्भगवद्गीता - अध्याय ४ श्लोक १३)

भगवान कहते हैं, सुन अर्जुन!

शब्दार्थ :

१. गुण कर्म विभाग से,
२. चारों वर्ण मुझसे रचे गये हैं।
३. उसका कर्ता होते हुए भी,
४. मुझ अविनाशी को तू अकर्ता जान।

तत्व विस्तार :

जैसा संग जिसका होता है, वैसा उसको वर्ण मिलता है। कर्मफल प्रभाव से ही उसको वह वर्ण मिलता है।

वर्ण :

क) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, ये चार

वर्ण कहलाते हैं।

- ख) वर्ण, जन्म द्वारा नहीं, गुणों द्वारा निर्धारित होता है।
- ग) वर्ण रुचि पर आधारित है।
- घ) वर्ण, गोत्र की बात नहीं है, स्वभाव की बात है।
- ङ) वर्ण मनोस्थिति की बात है।
- च) वर्ण का प्रमाण, गुण देते हैं, वर्ण प्रमाण मात्र पितु नहीं होते।

साधु का प्रमाण साधुता है; साधु कुल में जन्म होने से कोई साधु नहीं बन जाता। श्रेष्ठता का प्रमाण श्रेष्ठ कर्म हैं; श्रेष्ठ पितु का नाम आपको श्रेष्ठ नहीं बना सकता।

तुम क्या हो यह देख लो। जो तुम स्वयं हो, वही तुम्हारा वर्ण है। आप आन्तर में जो भी हो, वही आपके वर्ण को निश्चित करता है। आपका जीवन ही आपका वर्ण निश्चित करता है।

नहीं! जो आपको मिलना है, वह तो निश्चित हो चुका। कर्मफल के अनुसार आपका संसार तो रचा जा चुका है। आपका तन रचते समय प्रकृति ने गुण भी आपको दे दिये थे।

भगवान कहते हैं, सत् के न्याय के आधार पर सबको गुण मिल जाते हैं। इन गुणों के आधार पर ही संसार चार वर्णों में विभाजित हो जाता है। किन्तु साथ ही भगवान कहते हैं कि, ‘चाहे सम्पूर्ण रचना मैं ही करता हूँ और गुण, कर्म का आधार मैं ही हूँ, किन्तु तू यह जान ले कि मैं नित्य अकर्ता हूँ।’

नहीं! कर्म का फल सत् पर ही आधारित होता है, भगवान यह तो

ग्यारहवें श्लोक में समझा ही आये हैं (जो मेरे को, जैसे भजता है, मैं भी उसको वैसे ही भजता हूँ...)। अब भगवान यह कह रहे हैं कि कर्मफल का आधार तो सत् ही है, किन्तु सत् स्वरूप, आत्म तत्त्व, नित्य अकर्ता है। वर्ण, गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित होते हैं। लोग अधिकांश चार प्रकार के गुणों वाले होते हैं। इनमें से जो गुण अधिक मात्रा में हो, वही उस जीव का वर्ण होता है।

- १. सतोगुण प्रधान लोग ब्राह्मण हैं।
  - क) वे ज्ञान और प्रकाश की ओर बढ़ते हैं।
  - घ) वे दैवी सम्पदा प्रधान होते हैं।
  - ग) वे परम भक्ति पूर्ण लोग होते हैं।
- २. सत् तनिक गौण और रजोगुण प्रधान वृत्ति वाले लोग मन प्रधान और बुद्धि गौण, क्षत्रिय कहलाते हैं।
  - क) वे प्रजा का पालन करते हैं।
  - घ) वे शूरवीर, प्रतापी होते हैं।
  - ग) वे नाम कमाते हैं और श्रेष्ठ कहलाते हैं।
- ३. उन्हें मान से संग होता है, इसलिये अपनी ज़ुबान पर जान भी दे देते हैं।
  - घ) वे निरन्तर चेष्टा मन रहते हैं, वे अपना तथा अपने अधीन लोगों का संरक्षण करते हैं।
  - ३. रजोगुण प्रधान, तमोगुण गौण मिथित वृत्ति पूर्ण, मन प्रधान और लोभ तृष्णा पूर्ण लोग वैश्य कहलाते हैं।
    - क) वे भोग, तृष्णा और कामना पूर्ण लोग होते हैं।
    - घ) वे दम्भ और क्रोधपूर्ण, लोभी गुण वाले लोग होते हैं।
    - ग) वे भोग ऐश्वर्य, आसक्ति पूर्ण और सकारी गुण वाले लोग होते हैं।
    - घ) व्यापारी लोग यही होते हैं।
    - ঢ) বে বহু চেষ্টা মেঁ মস্ত রহনে বালে

होते हैं।

च) वे धनवान और बलवान लोग होते हैं।

छ) वे मिथ्याचारी और शैतान लोग भी हो सकते हैं।

आजकल जिन्हें मान मिलता है, वे इसी वर्ण वाले हैं। कलियुग में जिनको मान मिलता है, वे धनवान यही हैं। यही इस युग के प्रधान लोग हैं।

४. रजोगुण तथा तमोगुण प्रधान लोग, तनोशक्ति प्रधान होते हैं। वे भड़क जायें, तो महा तृफ़ान बन सकते हैं। इन्हें शूद्र कहते हैं।

क) वे ज्ञान और प्रकाश रहित होते हैं।

ख) वे अन्ध-विश्वासी होते हैं।

ग) वे लोग बुद्धि इस्तेमाल नहीं करते।

घ) वे अन्धे प्रवाह के साथ बहने वाले लोग होते हैं।

ड) अपने तन की हानि जो भी हो, दूसरा मारा जाये, ऐसे तामसिक लोग ये होते हैं।

च) जब ये भड़क जाते हैं, तो कहते हैं, 'मेरा चाहे कुछ न रहे, दूजा मिट जाये।'

छ) ये सहज में काम करने वाले होते हैं।

ज) ये दूसरे की सेवा और कामना पूरी करने वाले नौकर भी होते हैं।

नहीं! वैश्य लोग ब्राह्मणों को पसन्द नहीं करते, क्योंकि उनमें विलकुल विपरीत ख्यालात होते हैं। वे क्षत्रिय को भी नहीं सह सकते, किन्तु उन्हें अपनी रक्षा के लिये नौकर बनाना चाहते हैं। वे (वैश्य लोग) तम प्रधान गुण वालों का आसरा लेकर, मान और धन पाना चाहते हैं। ये अपने फ़ायदे के लिये तमो गुण वालों को भड़काते हैं। इस गुण के लोग, ब्राह्मणों और क्षत्रियों

का नाश करते हैं। अपने धन के बल पर, वैश्य लोग उन्हें पराजित करते हैं तथा आश्रित बनाते हैं।

तामसिक गुण वाले शूद्र, अन्धे तो होते ही हैं, जब ये भड़क जाते हैं, तो क्रान्ति हो जाती है। ऐसे व्यक्ति इस स्थिति में पहले वैश्य, फिर क्षत्रिय, फिर ब्राह्मण को मिटाते हैं।

नहीं! आजकल सब लोग वैश्य बनते जा रहे हैं, क्योंकि आजकल महत्ता केवल धन की रह गई है।

१. विधान बनाने वालों का चुनाव भी धन के बल पर होने लग गया है, इनसानियत के बल पर नहीं होता।

२. उच्च पद उन्हें मिलते हैं जो धन के लोभी लोगों का और अधिक धन कमाने में समर्थन करते हैं।

३. निर्धन की बात तो कोई पूछता ही नहीं। क्यों न कहें, अन्धे धन का राज्य हो गया है और दैवी धन का अभाव होता जा रहा है। इनसानियत से वंचित, इनसान रूपा जानवर बढ़ते जा रहे हैं।

नहीं! संसार में धन की नहीं, इनसानियत की कमी हो गई है। धन के पीछे जाने वाले लोग इनसानियत से रहित, केवल धनोपार्जन का यन्त्र बन गये हैं। सबको अपनी ही पड़ी है और भी इनसान है, यह अन्धों को दिखता ही नहीं। इस कारण यह सब तबाही हो रही है।

### कलियुग में धन की महत्ता :

धन बुरा नहीं होता, उसमें तो तीनों गुण छिपे हैं। आपको धन किसके लिये चाहिये, यह सोच लो।

क) क्या धन आपके लिये इनसान से तथा संग का ही है।  
अधिक महत्ता रखता है?

ख) क्या धन आपको जानवर बना दे,  
तो कोई बात नहीं?

ग) क्या धन आपकी शराफ़त लूट ले,  
तो कोई बात नहीं?

घ) क्या धन आपके घर को बरबाद कर  
दे, तो कोई बात नहीं?

ड) क्या धन आपके बच्चों को दुष्ट बना  
दे, तो कोई बात नहीं?

यह सब वार्ते आजकल के इनसान  
सोचते ही नहीं।

नहीं! बहुत कम परिवार इसलिये  
बिछुड़े क्योंकि उनके पास धन नहीं था;  
परन्तु लाखों घर इसलिये टूटे क्योंकि उनके  
पास धन आ गया था।

धन के अभाव के कारण इनसानियत  
नहीं गिरती। तो सोचिये, धन के आने से,  
इनसानियत क्यों गिर गई और निरन्तर  
गिरती जा रही है?

यदि वही धन आप दूसरों के सुख के  
लिये उपयोग करते, तो वही धन :

१. दैवी सम्पदा उत्पन्न कर देता।

२. पूर्ण देश के दिलों में चैन भर देता।

३. कुल संयोग वर्धक हो जाता।

४. कर्तव्य परायणता वर्धक हो जाता।

नहीं! यह सब दोष कामना, लोभ

### साधना प्रणाली :

नहीं ! साधक की साधना प्रणाली  
भी इन्हीं गुणों के क्रम के अनुसार होनी  
चाहिये।

१. पहले उहें काम करना सिखाओ और  
ज्ञान भी देते रहो।

२. फिर उन्हें धन कमाने की शक्ति दो  
और उहें धन कमाने दो।

३. फिर वह क्षत्रिय का रूप धारण करके,  
अपने धन का सदुपयोग करें। उससे  
साधुता की रक्षा और वर्धन करें।

४. तत्पश्चात् ही वह ब्राह्मण बन सकते  
हैं। तत्पश्चात् ही कहीं वह राजर्षि  
बन सकते हैं।

नहीं! साधक को सदा आज्ञाद रखना  
चाहिये। साधक को कभी भी नाम देकर या  
गुरु बन कर बाँधना नहीं चाहिये। जो  
आज्ञादी में पलते हैं, वह आत्मवान बन  
सकते हैं। सद्गुरु, ज्ञान देकर साधक को  
आन्तर्मुखी बनाते हैं फिर उसे बाहर खेंच  
कर आज्ञाद कर देते हैं। तत्पश्चात् शिष्य,  
यदि सच्चा साधक हो, तो वह अपने में  
सद्गुण तथा भागवद् गुण उत्पन्न करता हैं,  
तब वह अपने तन से भी आज्ञाद हो  
जाता है।

न मां कर्मणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्फुहा ।

इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स वध्यते ॥

(श्रीमद्भगवद्गीता - अध्याय ४ श्लोक १४)

### शब्दार्थ :

- क्योंकि कर्मों के फल में मेरा संग नहीं,
- इसलिये मैं कर्म में लिपायमान नहीं होता।
- इस प्रकार, जो मेरे तत्व को जानता है, वह भी  
कर्मों से बधित नहीं होता।

### तत्व विस्तार :

भगवान कहते हैं :

- गुण खिलवाड़ स्वतः ही हो रहा है।
- कर्म चक्र स्वतः चल रहा है।
- श्याम ने यह तत्व देख लिया। वह

- सत्य जानते हैं और उनका संग गुणों से नहीं है। इसलिये वह कर्म बन्धन से नहीं बंधते।
४. वह तन से, मन से और बुद्धि से संग नहीं करते।
  ५. गुण परिणाम में जो मिले उसके प्रति वे उदासीन ही रहते हैं।
  ६. तन रहित वह निराकार, मानो तन पे आसीन होते हैं।
  ७. भगवान को द्रष्टा मात्र कह लो।
  ८. वह है भी, पर है भी नहीं, क्योंकि वह आत्मा है, तन नहीं।
- उनके तन का नाम तो श्याम है, किन्तु वह तो तन नहीं है। श्याम तो अक्षर, आत्मा स्वरूप हैं। ब्रह्म स्वरूप वह आप है। इक तन ही नहीं, सम्पूर्ण तन वह आप है।
९. जो यह तत्त्व सार जानता है, वह कर्मों से नहीं बंधता।
  १०. भगवान के इस कथन को जो सच मानेगा, वह भी कर्मों से नहीं बंधेगा।
  ११. जो आत्मवान हो गया, उसे कर्म कैसे बाँधेंगे?
  १२. जब तन ही उसका नहीं रहेगा, तब वह तन के कर्मों को अपनायेगा ही नहीं।
  १३. तनों कर्म उसे क्या बाँध पायेंगे, जो तनोजन्म को अपना जन्म ही नहीं मानेगा?
- देख नहीं! भगवान अपनी ही बात बता कर अर्जुन को समझा रहे हैं कि, ‘मैं भी नित्य निर्लिप्त हूँ, तू भी नित्य निर्लिप्त हो जा! केवल संग की ही तो बात है, तू भी तन से संग छोड़ दे! तू भी कर्म बन्धनों से मुक्त हो जायेगा।’
- नहीं! अब इसे दूसरे दृष्टिकोण से समझ! भगवान आत्मा होने के नाते अभी कह कर आये हैं कि वह गुण विभाग राहीं सब कुछ आप रखते हैं। वह सबके कर्ता होते हुए भी अकर्ता हैं। इसी को अब आगे समझाते हुए भगवान कह रहे हैं कि कर्मों के फल से उनको आसक्ति नहीं है। कर्मों के फल से वह लिपायमान नहीं होते।
- देख मेरी जान्! लोगों को वह उन्हीं के कर्मों इत्यादि के अनुसार फल देते हैं।
१४. वह लोगों के बुरे या अच्छे कर्मों से संग नहीं करते।
  १५. कर्मफल देने के परिणाम रूप चाहे लोग भगवान को भुला ही दें, तब भी भगवान कर्मों का फल रोकते नहीं।
  १६. भगवान, कर्म फल न्याय पूर्ण ही देते हैं; चाहे लोग उन कर्म फलों के कारण भगवान के सुन्दर संसार को अपावन तथा दूषित कर दें।
  १७. कर्म फल देकर भगवान जीव को अपने प्रति पूर्ण रूप से स्वतंत्र बना देते हैं। भगवान कर्म फल देते समय अपने नाम या मान का तनिक भी ध्यान नहीं रखते। इस कारण आत्म तत्त्व स्वरूप नित्य निर्लिप्त हैं।
- नहीं! यदि तुम भी आत्मवान हो जाओ तो तुम भी अपने मान की परवाह कभी नहीं कर सकते। दुराचारी तुझे दुराचारी कहेंगे; क्रोधी तुझे क्रोधी कहेंगे; लोभी तुझे लोभी कहेंगे; कामी तुझे कामी कहेंगे। वह अपनी गलतियों तथा नाकामियों का इलजाम तुझे देंगे। अपनी सफलता का सेहरा स्वयं ले लेंगे।
- यह बात सुनकर साधक डर जाते हैं। किन्तु आत्म स्वरूप अभिलाषिणी नहीं जान्! तू इससे डर मत जाना। तुझे सच ही कहते हैं, आत्मवान को सम्पूर्ण संसार के कष्ट, कलंक इत्यादि एक पल के लिये भी विचलित नहीं कर सकते। वह तो नित्य आनन्द में रहता है। ♦

# त्याग इसे ही कहते हैं, बिन त्यागे जो छूट गया...



परम पूज्य माँ मन्दिर में...

तस्मै स होवाच । द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म  
यह्यविदो वदन्ति परा चैवापरां च ॥४॥

- मुण्डकोपनिषद्, प्रथम मुण्डक - प्रथम खण्ड

**अर्थात्** - उन शौनक मुनि से वे विख्यात महर्षि अङ्गिरा बोले - ब्रह्म को जानने वाले इस प्रकार निश्चयपूर्वक कहते आये हैं कि दो विद्याएं ही जानने योग्य हैं; एक परा और दूसरी अपरा भी!

तत्त्व विस्तारः

शौनक मुनि का प्रश्न सुनी, अङ्गिरा ऋषि यूँ बोले ।  
ब्रह्मवेत्ता जो कहें, मुखारविन्द सों यूँ बोले ॥१९॥

वेत्ता जन ब्रह्म ज्ञाता, देख री कहते आये हैं।  
परम को जिसने जान लिया, उसकी कहते आये हैं ॥२०॥

द्वौ विद्या को वेत्ता जन, प्राप्तव्य रे कहते हैं।  
 परा अपरा नाम धरे, ज्ञातव्य यह कहते हैं॥३॥  
 ज्ञातव्य दोनों कहें, स्थिति शिष्य की देख करी।  
 द्वौ श्रेणी विभक्त किया, परिस्थिति रे देख करी॥४॥  
 विनम्र भाव अरे देख तो लो, नहीं कहें वह आप कहें।  
 ज्ञान का सेहरा देख ज़रा, अंडिगिरा नहीं आप रे लें॥५॥  
 कहें ब्रह्मवेत्ता रे कहें, निश्चित कहते आये हैं।  
 द्वौ विद्या ज्ञातव्य हैं, वह ही कहते आये हैं॥६॥  
 लौकिक विद्या एक कहें, अलौकिक दूजी हो रे कहें।  
 स्थूल की विद्या एक कहें, कारण दूजी की रे कहें॥७॥  
 जग वासी के कोण से, दोनों ही पा वह लें।  
 जग विषय की विद्या भी, परम विषय की पा वह लें॥८॥  
 जीव कोण से देख कहें, पहले जग पा वह ले।  
 अतृप्त चाहना हिय धरी, उनको तो रे मिटा वह ले॥९॥  
 मिट मिट कर वह नहीं मिटे, भोग भोग कर नहीं मिटे।  
 अनेक तन रे पा करी, विषय भोग करी नहीं मिटे॥१०॥  
 विधि उसको पाने की, अपरा विद्या में कहें।  
 किस विधि कौन रे पा जाये, पूर्ण रूप से वह कहें॥११॥  
 चाहना पूर्ति साधना लो, कहें पूर्ण जान रे लो।  
 और सत्त्व उस परम को, भी साधक तुम जान रे लो॥१२॥  
 विन पाये मन तृप्त न हो, तड़प त्याग कोई त्याग नहीं।  
 नहीं मिला तो छोड़ दिया, जान रे मन यह त्याग नहीं॥१३॥  
 कहें अपरा विद्या ध्यायें, प्राप्ति साधन मिल जाये।  
 त्याज्य समझ तब छोड़ दे, परम ज्ञान जो मिल जाये॥१४॥  
 जग भी जब तोरे कर में हो, सत्त्व सारथी जान ले।  
 क्षणिक मिथ्या जान करी, तुलना से उसको जान ले॥१५॥  
 त्याज्य समझ फिर छोड़ दे, चाह वहाँ पर नहीं रहे।  
 परम सत्त्व की ओर रे, साधक तब ही बढ़ सके॥१६॥  
 बात्य रूप से गर साधक, अतृप्त चाहना छोड़ दे।  
 मन मिलन को तड़पाये, वह बात्य नाता तोड़ दे॥१७॥  
 परम सत्त्व यूँ नहीं मिले, कर्मगति कुछ गौण न हो।  
 तब लग सत्त्व न जान सके, जब लग यह मन मौन न हो॥१८॥  
 विधि कहें यह ज्ञान की, अपरा परा तू जान ले।  
 बात्य जग परम सत्त्व, ज्ञान रूप में जान ले॥१९॥

त्याज्य समझ कर छोड़ो रे, चाह रहे कोई त्याग नहीं।  
 न मिला तो छोड़ दिया, यह तो है वैराग्य नहीं॥२०॥  
 जिस दिन अन्न नहीं मिला, कहें देख उपवास किया।  
 मूर्ख मन रे जान ले, अपना ही परिहास किया॥२१॥  
 जब अन्न धरा हो सामने, और मन ही नहीं रहे।  
 एक ग्रास भक्षण करो, एक बार भी नहीं कहे॥२२॥  
 उपवास यह होता है, नाम चरण में जो रे किया।  
 एकचित्त दत्तचित्त, चित्त चरण में टिका रहा॥२३॥  
 उसी विधि यह यहाँ कहें, संसारी को कहते हैं।  
 द्वौ विद्या ज्ञातव्य है, जग वाले को कहते हैं॥२४॥  
 जब यन्त्र तेरे रे कर में हो, पार्थव सिद्धि पा जाये।  
 उस पल गर परम जाने, और मन तेरा न आ जाये॥२५॥  
 त्याग इसे ही कहते हैं, विन त्यागे जो छूट गया।  
 मन परम में देख टिका, स्वतः नाता टूट गया॥२६॥  
 ध्यान लगा जब राम में, अन्य ध्यान ही नहीं रहा।  
 चित्त परम में ऐसा टिका, नाम याद ही नहीं रहा॥२७॥  
 इस कारण वह देख कहें, द्वौ विद्या पा तू ले।  
 अपरा परा विद्या कहें, द्वौ विद्या पा तू ले॥२८॥  
 अनित्य नित्य का भेद तो, समझ रे तुझको आयेगा।  
 अनित्य त्याग कर करी, नित्य को तू चाहेगा॥२९॥  
 धीरे धीरे साधक रे, सत्त्व सार तू जानेगा।  
 परम तत्त्व इन द्वौ से परे, ज्ञातव्य तू जानेगा॥३०॥  
 या यूँ कहें वह परिचित से, शिशु को हैं उठा रहे।  
 अपरिचित सुझाने को, परिचित प्रथम बता रहे॥३१॥  
 परिचित प्रथम वह जान ले, क्षणिक अनित्य जान ले।  
 कोई तो इससे है परे, उसको भी तू जान ले॥३२॥  
 क्षणिक त्यजी परम ध्याये, यह ही कहना चाहते हैं।  
 इस कारण वह द्वौ विद्या, ज्ञातव्य बताते हैं॥३३॥  
 क्षणिक अनिश्चित जग ज्ञान, निस्सार उसको जान ले।  
 परम सत्त्व नित्य तत्त्व, आधार को भी जान ले॥३४॥  
 फिर द्वौ को त्यज करी, परम में वह परम भये।  
 दोनों ही ज्ञातव्य हैं, देख परम गुरु कहें॥३५॥

# ज्ञान है, तो उसका प्रमाण व्यवहार में होना है...

प्रस्तुति - श्रीमती वन्दना वैद

संसार के दृष्टिकोण से श्री आर एम सभरवाल का जीवन सफलता के चरम पर था... लेकिन उन्हें लगने लगा कि उनकी वास्तविक सफलता पूज्य माँ द्वारा दिखाये गए मार्ग पर चलने में है। पूज्य माँ में उन्होंने उस गुरु को देखा, जो कभी कोमलता से और कभी कठोरता राही उन्हें उनके इष्ट के चरणों में ले जा सकते हैं। वह एकनिष्ठ हो कर इस पथ पर अग्रसर रहे...

**रत्ती अंकल (श्री आर एम सभरवाल)** - आपने बताया कि विपरीतता को विपरीतता की तरह न देखो। इसे इम्तिहान की तरह देखो.....

**परम पूज्य माँ** - यह सच बात है, विपरीतता तो मन ही मानता है। अगर मन कहे तो विपरीत, नहीं तो विपरीत नहीं। इसलिये है तो यह मन की बात! किन्तु जीवन में इनसान यह बात मानता नहीं। वह कहता है, 'मुझे किसी ने गाली दी है, 'किसी ने मेरी चीज़ छीन ली' इसलिये वो विपरीत है...' हम दुःखी होते रहते हैं। सोचने की बात तो यह है कि अगर किसी ने ले लिया या किसी ने दे दिया, इससे क्या फ्रक्क पड़ता है? हमें तो अपने आपको देखना है। हमें तो अपने आप की तरफ जाना है... 'मुझे अपमान लगा कि नहीं और अगर लगा तो भगवान, मैं आपसे बहुत दूर हूँ...' क्योंकि अपमान तो आपने दिया है। मैं दोष किसी और को लगा रहा हूँ।' जिसे हम विपरीत कहते हैं उसे यही समझना चाहिये कि यह भगवान ने दिया है... और अगर भगवान ने दिया है तो विपरीत आपको विपरीत नहीं लगेगा।

आप यह ग़लती न कर बैठना कि दूसरे को ही बिगड़ दो। साधु कई बार असाधु को बहुत बिगड़ देते हैं; क्योंकि वो झुकते रहते हैं और असाधु ऊपर चढ़ते रहते हैं और उनको दबाते रहते हैं, जिससे उनका नुकसान हो जाता है। इसलिये साधु को इसके बारे में हमेशा सतर्क रहना चाहिये। ध्यान से देखना चाहिये कि क्या ठीक है और क्या ग़लत। विपरीतता को तो विपरीतता साधु नहीं मानता लेकिन विपरीतता में उसको कैसे काज करना है या कैसे उसको बोलना है, यह बात उसको जान लेनी चाहिये।

बाकी यह मन की ही बात है। जिसका मन मौन है उसके लिये विपरीत अनुकूल कोई चीज़ नहीं है। वह तो हर जा आनन्द में रहता है।

**रत्ती अंकल** - अभी आपने बताया कि प्रीत मौन में होती है.....

**परम पूज्य माँ** - प्रीत अगर मौन नहीं तो प्रीत नहीं। क्योंकि लाख प्रीत कर कर के भी वो बदल सकती है। अगर मन है, तो वो शर्तों से प्रीत है। मन कभी प्रीत नहीं करने देता।

‘यह मेरा है और ‘मेरा’ गलती कर ही नहीं सकता’ - यह मन की प्रीत है। वह अंधा हो जाता है। मन को मौन ही रहना चाहिये। अगर मन मौन हो जाये, तो प्रीत अखण्ड हो जाती है। फिर अनन्य हो जाती है। फिर “यत्र यत्र दृष्टिः गत्वा तत्र तत्र समाधयः...” जहाँ आपकी दृष्टि जायेगी

वहाँ समाधि हो जायेगी। वो प्रीत है या नहीं यह तो आपके सोचने की बात है। क्योंकि वहाँ पर जा कर आप एकरूप हो जायेंगे। वहाँ पर आप जहाँ भी देखेंगे, वहाँ पर उसके लिये जो ठीक है, वैसे करेंगे।

साधुओं पर दूसरों को शक्र ज्यादा हो जाता है। क्योंकि साधु का यह गुण है, वह जहाँ जहाँ देखते हैं, वहाँ पर एक हो जाते हैं। यह तो स्थितप्रज्ञ का लक्षण है। आत्मवान का यह लक्षण है। वो दूसरे की स्थिति पर जाता है, वो दूसरे के स्तर पर जाता है। इसलिये दूसरे को ही शक्र होने लगता है।

**रत्ती अंकल** - फिर मन को मौन की ओर ले जाने के लिये कौन सा ध्यान करना चाहिये?

**परम पूज्य माँ** - अगर प्रीत हो जाये, सच्ची प्रीत हो जाये तो मन की जगह रहेगी नहीं। या तो ज्ञान से ध्यान लगा कर वैसे कर लो, या मन को दूर से देख कर वैसे कर लो। किन्तु भक्ति से आसान कोई तरीका नहीं। भक्ति का तो अर्थ ही यह है कि ‘मैं’ की हस्ती ही कुछ नहीं। मेरी तो बात है ही नहीं।

‘मैं’ को भक्त ने कभी देखा ही नहीं। अपने तन की अवस्था या व्यवस्था की बात को तो भक्त ने कभी नहीं देखा। इसलिये भक्त तो बड़ी आसानी से आगे चला जाता है। यह तो आसान तरीका है, क्योंकि मन ही खो गया। दूसरा तरीका यह है कि अपने मन पर काबू डालो। इसके ऊपर आपका संयम होना चाहिये। आपकी इन्द्रियों पर आपका संयम होना चाहिये। भक्त को कहाँ याद है कि उसने क्या खाया, क्या पीया, कैसे हुआ... क्या किसी ने कहा और क्या किसी ने नहीं कहा... भक्त को तो इसका ख्याल ही नहीं आता।

अगर आप ज्ञान से आते हैं तो भी बहुत सुन्दर है। आप अष्ट सम्पदा को अपने



परम पूज्य माँ के साथ रत्ती अंकल (आर एम सभरवाल)

जीवन में लाइये या वेदान्तिक ढंग से आइये। आप यह निर्णय कर सकते हैं कि यह सत्य है या असत्य, नित्य है या अनित्य। अगर आप यह जान लें तो आपका अनित्य से वैराग्य हो ही जायेगा। उसके बाद one pointed yearning रह जायेगी। उसी एकाग्र वृत्ति से आप आगे बढ़ ही जायेंगे... यह जानने के लिये कि आप कौन है? जैसे चित्ता जलती है और मशाल उसी में डाल दी जाती है उसी तरह इस 'मैं' को भी भस्म होना होता है। इसलिये आपको जो विधि अच्छी लगे वो विधि कर लो। पर इस मन को अपने आप को चोरी न करने दो। यह जो मन है, यह तो बड़ा धोखेबाज़ है और यह हमें ही ख़राब करता है। किसी और को तो ख़राब यह क्या करेगा?

लेकिन यह उत्तर पूरा नहीं है। जो कोई भी ढंग अपनाया है इसका प्रमाण जीवन में होना चाहिये। कोई कहे, 'मैंने बड़ा ध्यान लगाया है और मैं ध्यान बहुत लगाता हूँ, तो उससे यह पूछो जीवन में क्या होता है? दिनचर्या में क्या होता है? दूसरे के साथ व्यवहार कैसे होता है? इसी तरह भक्ति है, उसका भी प्रमाण व्यवहार में है। ज्ञान है, तब भी उसका प्रमाण व्यवहार में है। या जो भी पथ ले लो उसका प्रमाण जीवन में है। अगर आप स्थितप्रज्ञ हो या भक्तिवान हो या गुणातीत हो या कर्मातीत हो, उस सबका प्रमाण आपके जीवन में होना चाहिये। इसलिये तवज्ज्ञ ह उस तरफ़ होनी चाहिये कि मेरे जीवन में क्या होता है?

यह न सोचो कि मन्दिर में क्या होता है। यह सोचो कि मन्दिर के बाहर क्या होता है? यह न सोचो कि हम बड़ी ऊँची ऊँची बातें कर लेते हैं मन्दिर में और बड़े बड़े ऊँचे ऊँचे सवाल और जवाब हो जाते हैं मन्दिर में। वो मन्दिर की बात है। बाहर जा के क्या होता है? अगर बाहर जाकर अहंकार उठ आये और मन्दिर में हमें बड़े बड़े अनुभव होने लगे, तो उन अनुभवों का हमें कोई फ़ायदा नहीं। क्योंकि अनुभव तो बाहर होना है। 'अनुभव' होता है 'होने के बाद'। होने के बाद वो बाहर होना है, मन्दिर में नहीं। मन्दिर में तो सिर्फ़ direction मिलती है। अभ्यास होता है थोड़ा बहुत। लेकिन उसका असली वास्तविक रूप जो है, वह बाहर है जीवन में। जीवन और हमारे कर्मक्षेत्र में हमारा प्रमाण है। हमारा प्रमाण हमारे ज्ञान से नहीं होता। हमारे पास बड़ी भक्ति है, बड़ा ज्ञान है, बड़ा ध्यान है, बड़ा नाम है, इनसे प्रमाण सिद्ध नहीं होता। यह बातें हैं। यह अपने आपको धोखा भी देना बन सकता है।

इसलिये जीवन प्रमाण है। हरेक चीज़ का जीवन ही प्रमाण है। अगर हम यह कहते हैं कि हम मन्दिर में बैठकर पूजा करते हैं इसलिये हम दुनिया से श्रेष्ठ हैं, तो हम बहुत ज़ोर से गिर गये। क्यों? जो मन्दिर में हमने सुना वो हमने किया नहीं। जो हम मानते हैं, हमारी बुद्धि मानती है, वो हमने किया नहीं। और जो दुनिया में रहते हैं, जो वो मानते हैं, वो वह करते हैं। तो श्रेष्ठ कौन हुआ? सच्चा तो वो हुआ जो दुनियादार है, क्योंकि जो वो मानता है, वो वह करता है। हम लोग तो झूठे के झूठे ही रह गये क्योंकि जो हम मानते हैं, वो हम करते नहीं। इसलिये हमें इस चीज़ का विचार करना ही है कि हम करते क्या है? सहज जीवन में क्या करते हैं? क्या वो ठीक है या वो ग़लत है? उचित, अनुचित यहाँ से पता लगता है! ♦



परम पूज्य माँ

# अर्पणा

## समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,  
करनाल, हरियाणा  
दिसम्बर २०१५

### अर्पणा के समारोह



#### अर्पणा दिवस

परम पूज्य माँ का जन्म दिवस २६ अगस्त को मनाया गया। मन्दिर एवं समाधि स्थल पर मित्रगण, श्रद्धालु एवं स्टाफ के सदस्य, अर्पणा परिवार के साथ प्रार्थना में सम्मिलित हुए। २५ तारीख को मन्दिर में भक्तिपूर्ण गायन एवं नृत्य की संध्या ‘उर्वशी’ के रंगों से ओतप्रोत रही... जो मानव जाति की भावी पीढ़ी के लिए पूज्य माँ का बहुमूल्य उपहार है!

प्रीति भोजन सबके साथ प्रेमपूर्वक मिल बाँट कर सम्पन्न हुआ।

**कृष्ण सुदामा - भक्तिपूर्ण मंच प्रस्तुति**, ‘कृष्ण सुदामा’ द्वारा, पूज्य माँ के कहे शब्द सजीव हो उठे, जिसे एकत्रित श्रद्धालुओं के लिए प्यार की भावना से प्रस्तुत किया गया। प्रतिभागियों में ‘अर्पणा की उर्वशी ललित कला अकादमी’ के छात्र, अर्पणा परिवार के सदस्य एवं पास ही के बालभवन के बच्चे भी सम्मिलित थे।

#### उर्वशी दिवस/ छोटे माँ का जन्म दिवस/ अस्पताल दिवस

परम पूज्य माँ द्वारा शास्त्रों के विस्तार के व्यावहारिक आध्यात्मिक ज्ञान का स्वतः सुरित प्रवाह, १९५० के दशक में २ अक्टूबर को प्रारम्भ हुआ। अर्पणा में यह दिन ‘उर्वशी दिवस’ के रूप में मनाया जाता है।

यह दिन पूज्य छोटे माँ के जन्म दिवस के रूप में भी मनाया जाता है, जो पहली बार शारीरिक रूप में हमारे मध्य में नहीं थे। वह हमेशा ही हमारे हृदयों में हैं, और उनके द्वारा लेखनीबद्ध किये गये ‘उर्वशी’ के इस अनुपम उपहार के लिए उन्हें बहुत आभार के साथ याद किया गया। स्टाफ, परिवार एवं आस-पास के गाँवों से आये श्रद्धालुओं ने प्रीति भोजन प्रेमपूर्वक ग्रहण किया।

इस दिवस को १९८० में स्थापित किये गये अर्पणा अस्पताल के स्थापना दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। यहाँ हमारे ग्रामीण भाई बन्धुओं को पिछले ३५ वर्षों से चिकित्सा सहायता दी जा रही है। अब तक यहाँ ९,५००,०००/- से अधिक रोगियों का इलाज किया जा चुका है।



# हिमाचल

## रजाइयों का वितरण

३० अगस्त को, गाँव 'भादियाँ कोटी' के २५ ज़रूरतमन्द और गरीब परिवारों को रजाइयाँ दी गईं और २५ अन्य परिवारों को २-२ कम्बल वितरित किये गये। सर्दियों के महीनों के लिए अर्पणा से यह उपहार पाकर, उनके चेहरों पर खिली हुई मुसकान आभार व्यक्त कर रही थी।



## निःशुल्क स्त्री रोग शिविर

२७ सितम्बर को, डलहौज़ी में बकरोटा स्थित 'अर्पणा स्वास्थ्य देखभाल एवं डायानोस्टिक सैन्टर', में ४९ रोगियों के लिए एक निःशुल्क स्त्री रोग शिविर का आयोजन किया गया।



सत्यम अस्पताल, सुलतानपुर, चम्बा के डॉ. हेमन्त शर्मा, एम डी, स्त्री रोग विशेषज्ञ, ने २९ रोगियों की जाँच की। २९ स्त्री रोग से प्रसित रोगियों में से ४ रोगियों को सत्यम अस्पताल में ऑपरेशन कराने की सलाह दी गई, जो रोगियों के लिए निःशुल्क रहेगा। उनका सारा खर्च अर्पणा द्वारा वहन किया जायेगा।

## किसानों के लिए संगोष्ठी

९ अक्तूबर को, कृषि प्रायोगिकी प्रबन्धन एजेन्सी से कृषि अधिकारियों द्वारा गजनोई स्थित अर्पणा केन्द्र में एक किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अर्पणा किसान समूहों एवं स्टाफ से ६९ महिलाओं एवं पुरुषों ने इसमें भाग लिया। कृषि योजनाओं, मृदा परीक्षण, सम्बिंदी और मवेशियों एवं डेयरी की समस्याओं पर चर्चा की गई। उन्हें फोन करने के लिए एक टोल फ्री नम्बर दिया गया।



**किसानों के उत्साह और समझ को बढ़ाना**  
अर्पणा के २ किसान समूहों से १७ सदस्यों ने 'चुराह वैली फूट एण्ड वैजिटेबल कोऑपरेटिव सोसाइटी' एवं चम्बा ज़िला के टिस्सा में वैष्णवी हर्वल सोसाइटी का २९-३० अक्तूबर को दौरा किया जहाँ उन्होंने खरीद एवं विपणन के सफल तरीके सीखे। इस प्रकार के दौरों से किसानों की समझ एवं उत्साह में वृद्धि होती है जिसे वो अपनी सोसाइटी की अधिक आय उपार्जन के लिये प्रयोग करते हैं।

अर्पणा, बैज नाथ भण्डारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट और टाइड्ज़ फाउंडेशन का, हिमाचल स्वास्थ्य और विकास कार्यक्रमों में सहयोग देने के लिये आभारी है।

# ग्रामीण हरियाणा

## विकलांग लोगों के लिए स्वास्थ्य शिविर

अर्पणा द्वारा अगस्त और सितम्बर महीने में विकलांग लोगों के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया।

- ◆ बुढ़ाखेड़ा क्लीनिक में सप्ताह में २ बार शिविर
- ◆ ११ गाँवों में ४ विशेष ग्रामीण शिविर
- १५३ रोगियों ने भाग लिया
- ४६ रोगियों को अर्पणा अस्पताल लाया गया।
- ◆ २८ मानसिक रूप से रोगियों के लिए दिल्ली के मनोचिकित्सक, डॉ. विशाल छावड़ा, द्वारा मनोरोग शिविर।



## भौतिक चिकित्सा शिविर



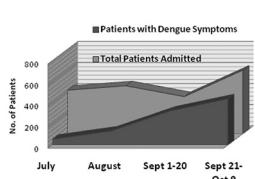
शिविरों में २ भौतिक चिकित्सकों द्वारा विकलांग व्यक्तियों की जाँच की गई, जिनके जोड़ कड़े हो गये थे और जो चल पाने में असमर्थ थे। उन्हें विशिष्ट व्यायाम सिखाये गये और रोगियों एवं उनके रिश्तेदारों को भी पोषण के विषय में सिखलाया गया। भौतिक चिकित्सकों द्वारा नियमित रूप से वहाँ जाकर अथवा टैलीफोन से इन रोगियों का ख्याल रखा जाता है।

व्यक्तिगत रूप से उनका ध्यान रखने एवं व्यायाम करवाने से उनकी गतिशीलता में ८५% सुधार हुआ है।

## अर्पणा अस्पताल

### डेंगू मरीजों की बहुतायत

अर्पणा अस्पताल में, अगस्त २०१५ के अन्त से डेंगू जैसे लक्षणों के साथ (तेज बुखार और कम प्लेटलेट काउन्ट) रोगियों की मानो बाढ़ सी आ गई।



जुलाई में यहाँ के १३% रोगी उच्च तापमान से पीड़ित थे। सितम्बर के पहले २० दिनों में ९१% रोगियों को डेंगू की तरह के लक्षणों के साथ अस्पताल में भर्ती कराया गया।



डेंगू साल के सावन का प्लेटलेट काउन्ट तेजी से गिरा

### बराना गाँव में सी बी एम के सहयोग से नेत्र जाँच शिविर

- मधुमेह रेटिनोपैथी शिविर - ८ नवम्बर को १० रोगियों की जाँच की गई
- बच्चों के लिए नेत्र शिविर - ९ नवम्बर को ६५ छात्रों की नेत्र जाँच की गई

अर्पणा, सी बी एम, टाइड्ज़ फाउंडेशन, आई डी आर एफ और बैज नाथ भण्डारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट का इन कार्यक्रमों में सहयोग देने के लिए धन्यवाद करता है।

# अर्पणा दिल्ली



## अर्पणा हस्तशिल्प सेल - एक यज्ञ

डॉ राज एवं इन्द्र गुप्ता, लीना एवं राहुल गुप्ता के घर में, ३० अक्टूबर से १ नवम्बर तक, सभी प्रतिभागी - मेज़बान, परिवार के सदस्य, मित्रगण, विक्रेता अथवा ख़रीदार - ने इस यज्ञ में भागीदारी की भावना का अनुभव किया। सभी उन्मुक्त भाव से अपने आपको दे रहे थे... ग्रहणकर्ता थे स्वयं भगवान... स्वयं परम पूज्य माँ!

इस यज्ञ का भाग बनने का अवसर पाकर हमारे हृदय आभार से भर गये। यह आय वंचित ग्रामीण महिलाओं को बेहतर जीवन जीने के लिए सक्षम करती है।

## सफलता की कहानियाँ



मोलरबन्द के अविनाश चौधरी ६५वीं कक्षा से अर्पणा में हैं। वह सी बी एस ई करने के बाद यू पी बोर्ड से स्नातक की डिग्री कर रहे हैं। उन्होंने एन आई आई टी से ३ महीने का कम्प्यूटर कोर्स किया, जिसे वह पूरा करने में असमर्थ रहे। फिर भी, वह एम आई एस कार्यकरी के रूप में १०,०००/- रुपये की नौकरी प्राप्त कर पाये। एन आई आई टी में दूसरा मौका मिलने पर उन्होंने ७०% अंक अर्जित किये।

दिव्या ने १०वीं कक्षा तक अर्पणा में पढ़ाई करने के बाद दिल्ली यूनिवर्सिटी से बी ए किया। अब वह एक वारिष्ठ प्रमाणन कार्यकरी के रूप में ३३,०००/- प्रतिमाह वेतन ले रही है। २०१३ में ऑर्गेनिक मेले में उन्होंने जर्मनी एवं दुर्वई में अपनी कम्पनी का प्रतिनिधित्व किया। उनका कहना है, “मैंने जो कुछ भी पाया है वह अर्पणा में मेरे शिक्षकों के सहयोग के बिना सम्भव ही नहीं था।”



अर्पणा के शिक्षा के कार्यक्रमों में सहयोग देने के लिए, एस्सेल फाउंडेशन, अवीवा प्रा. लि. और केयरिंग हैण्ड फॉर चिल्ड्रन, का धन्यवाद करते हैं।

### Your assistance is needed to continue these programmes:

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are Both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.

FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001

FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002

Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to: Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037

Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to: Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037

Tel: 91-184-2380801, Fax: 91-184-2380810, [at@arpana.org](mailto:at@arpana.org) and [arct@arpana.org](mailto:arct@arpana.org)

Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.

Mrs. Aruna Dayal, Director Development Mobile +91-9896242779, +91-9873015108



# Premier Wealth Creators Pvt. Ltd.

*Plan Wisely, Live Fully*

**"A Goal without a Plan is just a Wish"**

## Famous Words from most successful Investors in the world:

- ❖ **Earning:** "Never depend on single income. Make investment to create a second source".
- ❖ **Spending:** "If you buys things you do not need, Soon you have to sell things you need".
- ❖ **Savings:** "Do not save what is left after spending, but spend what is left after saving".
- ❖ **Risk:** "Never Test the depth of river with both the feet".
- ❖ **Investment:** "Do not put all eggs in one basket".
- ❖ **Expectation:** "Honesty is expensive gift. Do not expect it from cheap people".

The investor should have a Financial Plan for financial goals. Intelligent investing isn't get-rich-quick process. Neither is it a panacea, or one-size-fits-all process. It is rather a process that allows investors to reach certain financial goals through a carefully crafted financial plan.

Please feel free to call or mail us for:

Rajender Rautela : +918800779485 : [rajenderr@wealth-creators.in](mailto:rajenderr@wealth-creators.in),

[www.wealth-creators.in](http://www.wealth-creators.in)

**Financial Planning**

**Wealth Management**

**Investment Advisory**



*Premier* Wealth Creators Pvt. Ltd.

*Plan Wisely, Live Fully*

**"A Goal without a Plan is just a Wish"**

Have you planned for your Retirement or any other Financial Goal ??? We assist you in reaching your Financial Goal through Financial Planning



**Financial Planning   Wealth Management   Protection Planning   Investment Advisory**

Call or mail us for:

Rajender Rautela : +918800779485 : rajenderr@wealth-creators.in, www.wealth creators.in